श्रीमति नीरा मानिकपुरी की कहानी

मै अपनी कहानी बताने से पहले अपने परिवार के बारे मे बताना चाहती हूॅ मेरा नाम **नीरा मानिकपुरी पति श्री राजकुमार मानिकपुरी**, मेरे दो बच्चे है छोटे बेटे का नाम सनी मानिकपुरी 10 वर्ष का है सनी 5 वी केक्क्षा मे है और बड़े बेटे का नाम राहुल मानिकपुरी है जो की 15 वर्ष का है, राहुल 8 वी कक्क्षा मे है अब मै अपने कहानी मे आती हूॅ दस वर्ष पहले मै एक गांव के गरीब परिवार मे बहू बनकर आई थी । उस समय हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी, और हम रैतापारा नामक गांव मे रहते थे मेरे ससुर और मेरे पति मजदुरी करते थे अचानक मेरे ससुर जी की मृत्यु हो गई, और हम लोग बेसहारा हो गये, हमारी आर्थिक स्थिति और खराब हो गई थी, दो बच्चे, बुढीसास का देख भाल ठीक से नही हो पा रहा था । हम लोग चिंतित रहते थे, इसी स्थिति मे दो तीन वर्ष बीत गये । और फिर हम काम की तलाश मे कवर्धा शहर आ गये कवर्धा मे आने के बाद हम हमारे रिशतेदार के यहॉ रूके। फिर हमने आस–पास जगह तलाश कर नहर के पास वार्ड क्र.– 27 मे एक झोपडी बनाकर रहने लगे मै और मेरे पति मजदुरी करने लगे मै पास के पुलिस लाईन मे झाडू पोछा का काम करती थी ।

एक दिन अपने झोपडी के पास खडी थी और वही मेरी मुलाकात नगर पालिका परिषद कवर्धा की सी.आर.पी. दीदी से हूई उन्होने मुझे एक समुह मे जोडा और दस लोगो का समुह बनाकर दी, तथा बैंक मे खाता खुलवाया और समुह का नाम प्रगती महिला स्व.सहायता समूह रखा गया, हम उस बैंक मे प्रतिमाह बचत राशि जमा करते है, इसी बीच स्वच्छ भारत मिशत अन्तर्गत समुहो का काम करने की सूचना मिला और हमने आवेदन किया, मुझे महिला के सॉथ रिक्शा दिया गया । दुसरे दिन से मै अपने साथी के साथ डोर–टू–डोर कचरा कलेक्शन का कार्य करने लगी जिससे मुझे प्रतिमाह 6000 रू. मिलता है और कचरा बेचने से भी कुछ राशि मिलती है, और इसी राशि का कुछ हिस्सा बचत कर मैने अपने पति के लिए एक ठेला लेकर दिया जिसमे वो चाय, समोसा, बेचते है जिससे हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति मे सुधार आया है, मेरे दोनो बच्चे अपने जीवन मे कुछ करना चाहते है सनी डॉक्टर बनना चाहता है और राहुल पुलिस ऑफिसर बनना चाहता है। मै स्वच्छ भारत मिशन के इस मुहिम का बहोत बहोत धन्यवाद देती हूॅ जिसके कारण मेरी परिवार अब खुशहाल है।